चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी (एम.ए.)

कहानी – E.C. 1

प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी

- आंचलिक कहानी
- नयी कहानी
- सामांतर कहानी
- अकहानी

आंचलिक कहानी :

नयी कहानी की एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में आंचलिकता की चर्चा होती है। आंचलिक कहानी से जुड़े कहानीकारों में प्रमुख नाम फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, मार्कण्डेय हैं। जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति ने आंचलिक कहानी को जन्म दिया। हिन्दी साहित्य में 'आंचलिक' शब्द का आगमन रेणु द्वारा हुआ है। रेणु ने 'मैला आँचल' उपन्यास के भूमिका में लिखे हैं–"यह है मैला आँचल, एक आंचालिक उपन्यास।"

आजादी के बाद जनचेतनावादी साहित्य के आँधी में यथार्थ– अभिव्यक्त को लेकर आंचलिक कहानी का सूत्रपात हुआ। आंचलिक कहानी के स्वरूप को लेकर रेणु, धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० शिवप्रसाद सिंह, राजेन्द्र अवस्थी आदि ने खूब लिखे हैं। आंचलिक कहानी सीमित कथांचल स्थानीय रंग में भाषा और अभिनव शिल्प में तीन तत्व को लेकर व्यापित होती है।

कुछ प्रसिद्ध आंचलिक कहानियों के नाम इस प्रकार हैं :

फणीश्वरनाथ रेणु : तीसरी कसम, ठेस, लालपान की बेगम आदि।

मार्कण्डेय : हँसा जाई अकेला, भाई, पान फूल आदि।

शिवप्रसाद सिंह : कर्मनाशा की हार, माटी की औलाद, गंगा तुलसी आदि।

अन्य आंचलिक कहानीकार : राजेन्द्र अवस्थी, शैलेश मटियानी आदि।

आंचलिक कहानी की प्रवृतियाँ :

- आंचलिक कहानियों में गाँव की मिट्टी की सोंधी महक और गाँव के लोगों का जीवन देखने का मिलता है।
- कथानायक का आंचलिक आधार, अंचल की लोक संस्कृति रहन–सहन, उत्सव, आदर्श आदि का निरूपण है।
- आंचलिक कहानी की भौगोलिक स्थिति का अंकन अनिवार्य है। भौगोलिक स्थिति से पाठक को अंचल–विशेष के प्रति रूचि एवं विश्वसनीयता उत्पन्न होती है तथा प्रकृति–चित्रण सजीव हो उठता है।
- विशिष्ट अंचक का समग्र रूप में चित्रण वहाँ की लोकभाषा में होता है।

नयी कहानी :

स्वतंत्रता के आसपास के वर्षों को 'नवलेखन' का काल माना जाता है। सन् 1955 में 'कहानी' पत्रिका का प्रकाशन हुआ। नवीन चेतना की खोज करने वाले कहानीकारों को इस दौर को आगे बढ़ाने का अवसर मिला। उन्होनें 1956–57 में इसका नाम "नयी कहानी" रख दिया।

नयी कहानी के प्रवर्तकों में से प्रमुख नाम हैं–मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, मन्नू भण्डारी, निर्मल वर्मा, उषा प्रियंवदा।

वस्तुतः 'नयी कहानी' की कहानियाँ अपने समय के जीवन को समग्रता से पकड़ने की कोशिश करती है। गाँव हो या कस्बा, नगर हो या महानगर, सब के जीवन उनकी विसंगतियों, उनके मूल्यों–मर्यादाओं और उनमें आने वाले व्यापक परिवर्तनों को नयी कहानी का कहानीकार बड़ी बारीकी से चित्रित किया है।

नयी कहानी की विशेषताएँ :

- यथार्थ के प्रति नया रूख।
- संबंधों के बदलाव का बिंदु।
- दांपत्यश्त जीवन का स्पष्ट चित्रण
- मध्यवर्गीय जीवन और व्यक्ति कहानी के केन्द्र में।
- महानगरीय जीवन बोध और व्यक्ति कहानी के केन्द्र में।
- मूल्यों और मानवता में परिवर्तन।
- विदेश से आयातित मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद दर्शनों का प्रभाव।
- परिवेश के प्रति जागरूकता।
- भाषा की समर्थ अभिव्यंजना और नये–नये बिम्बों और प्रतीकों का प्रयोग आदि।

कुछ प्रसिद्ध कहानीकार :

मोहन राकेश : 'मलबे का मालिक', मिस पाल, एक और जिंदगी उसकी रोटी और आखिरी सामान आदि।

कमलेश्वर : देवा की माँ, तलाश, राजा निरवंसिया आदि।

राजेन्द्र यादव : जहाँ लक्ष्मी कैद है, खेल खिलौने, ढाल, छोटे–छोटे ताजमहल, अपने पार आदि।

अमरकांत : जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मित्र–मिलन आदि।

निर्मल वर्मा : परिंदे, जलती झाड़ी, पिछली गर्मियों में, बीच बहस में आदि।

मन्नू भंडारी : मैं हार गई, तीन निगाहों की एक तस्वीर, एक प्लॉट सैलाब आदि।

सामांतर कहानी :

सामान्यतः सन् 1972 में सामांतर कहानी का आरंभ माना जाता है। सामांतर कहानी का प्रवर्तक कमलेश्वर थे और 'सारिका' पत्रिका के माध्यम से यह कहानी आंदोलन ने अपनी गति पकड़ी।

कथा–लेखन में एक ऐसा वर्ग जो उपेक्षित होते जा रहा था या पर्याप्त साधन नहीं पा रहा था। जो सामाजिक दृष्टि से अपना विशेष महत्व रखता है। सामांतर कहानी में इस उपेक्षित वर्ग को 'आम आदमी' के रूप में स्वीकारा गया। कथा–लेखन में आम आदमी को घोषित रूप में लाया गया। उस आम आदमी को जो गाँवों, कस्बों, नगरों, महानगरों सबसे अपना संबंध रखता है, जो सब जगह मौजूद है। अपनी स्थितियों और परिस्थितियों के साथ। "आम आदमी के आसपास आज की कहानियाँ" सामांतर कहानी का सूत्र–वाक्य हो गया। यह आन्दोलन 'नयी कहानी' के समान लोकप्रिय नहीं हो सका।

इस कहानी से जुड़े कहानीकारों में प्रमुख नाम है :

मधुकर सिंह : पूरा सन्नाटा, भाई का जख्म

हद्रयेश : वक्त कटी

कामतानाथ : अत्यंष्टि, तीसरा माँज

बसंत कुमार : सुरंग में पहली सुबह

कमलेश्वर : जोखिम, बयान, इतने अच्छे दिन आदि।

सामांतर कहानी की विशेषताएँ :

- जन चेतना के प्रति प्रतिबद्धता
- निम्न मध्य तथा मध्यवर्गीय नगरीय और ग्रामीण शोषित जन–जीवन की अभिव्यक्ति
- वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा तथा परंपरागत भ्रष्ट मान्यताओं का विरोध
- समकालीन सामाजिक आर्थिक समस्याओं का चित्रण।
- नये जीवन मूल्यों की तलाश आदि।

अकहानी :

अकहानी का प्रर्वतक गंगा प्रसाद विमल हैं। इसे साठोत्तरी कहानी और समकालीन कहानी नामों से भी जाना जाता है। अकहानी कहानी की पारंपरिक अवधारणाओं से भिन्न कहानी है। इसमें कथा या घटना को अस्वीकार कर संत्रास, आत्मपीड़न, ऊब, अकेलापन, अजनबीपन और विसंगति आदि मानसिक उद्देगों की अभिव्यक्ति हुई है।

अकहानी की विशेषताएँ :

- मानव पीड़न और अस्तित्व खोज की अभिव्यक्ति।
- भयावह यथार्थ का अंकन।
- परंपरागत मूल्यों का विरोध।
- शिल्पहीन शिल्प विधान।
- यथार्थ से सीधा साक्षात्कार

इन विशेषताओं को देखकर कहा जा सकता है कि अकहानी के रचनाकारों ने पश्चिमी के एब्सर्ड को अपनाया है। उनकी कहानियों में अभिव्यक्ति की निरर्थकता, भावों की अपूर्णता, जीवन की विसंगति, व्यक्तित्व का विघटन आदि की प्रधानता रही है।

इस कहानी से जुड़े कहानीकारों में प्रमुख नाम है :

गंगा प्रसाद विमल : शीर्षकहीन

ज्ञानरंजन : पिता

रविन्द्र कालिया : एक डरी हुई औरत, बड़े शहर का आदमी

दूधनाथ सिंह : रक्तपात

श्रीकांत वर्मा : टयूमर आदि।

डॉ० रामदरश मिश्र के अनुसार–"वस्तु के स्तर पर अकहानी ने प्रायः सामाजिक संघर्षों से संम्बन्धित विषय को ग्रहण न कर स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों या यौन–प्रसंगों को ही ग्रहण किया है और मूल्य के स्तर पर उसने न केवल पहले के सारे मूल्यों का निषेध किया अपितु 'साहित्य के मूल्य का अस्तित्व है' इस सत्य का निषेध कर दिया।"

अकहानी में यद्यपि विद्रोह का स्वर है, किन्तु यौन सन्दर्भों तक सीमित रहने के कारण वह विकृत हो गया है।

अकहानी का शिल्प भी बदला हुआ है। उसमें पात्रों के नाम–ग्राम का परिचय न देकर वह, मैं, तुम आदि प्रयोगों की अधिकता है। सेक्स केन्द्रित होने के कारण 'अकहानी' आन्दोलन दीर्घजीवी नहीं हुआ।

प्रस्तुतकर्ता
डॉ० कंचन कुमारी
अतिथि शिक्षक
हिन्दी विभाग,
पटना विश्वविद्यालय, पटना
E-mail Id :
kanchanroycool@gmail.com